JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक के उपन्यासों में चित्रित बदलते पारिवारिक मूल्य- विवाह के संदर्भ में

गांधीमती. एस
हिन्दी शोधार्थी
हिन्दी विभाग
मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई -5

भूमिका

भारतीय संस्कृति में परिवार को समाज की आधारशिला माना गया है। परिवार से ही समाज की निरंतरता बनी रहती है। क्योंकि परिवार से ही वह स्थायी एवं शाश्वत संस्था है जो न केवल सामाजिक स्तर पर आधारभूत भूमिका निभाती है अपितु उसका स्वरूप ही स्वयं में संपूर्ण है। इसके मूल में विवाह, संतान, उत्तरदायित्व और पारस्परिक रिश्ते जैसे मूल्य शामिल रहे हैं। भारतीय समाज सदैव अपनी पारिवारिक संरचना और उससे जुड़े नैतिक मूल्यों के कारण विशिष्ट रहा है। बीसवीं शताब्दी तक, भारतीय परिवार की पहचान मुख्य रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली , पितृसत्तात्मक ढाँचे और त्याग तथा सामूहिकता पर आधारित सुदृढ़ पारंपरिक मूल्यों से थी। यहाँ व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक पारिवारिक मान-मर्यादा और दायित्वों को प्राथमिकता दी जाती थी। मगर इक्कीसवीं सदी के आगमन के साथ ही वैश्वीकरण, बाज़ारवाद, और सूचना क्रांति की तीव्र लहर ने भारतीय सामाजिक और पारिवारिक संरचना में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिए हैं। आर्थिक उदारीकरण ने जहाँ रोज़गार के नए अवसर पैदा किए, वहीं इसने शहरीकरण और व्यक्तिवाद की भावना को भी प्रबल किया। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव हमारे पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों और संबंधों की प्रकृति पर पड़ा है। अब विवाह को अनिवार्य न मानना, अथवा सहजीवन को चुनना, पारिवारिक ढांचे में हो रहे इन्हीं परिवर्तनों के उदाहरण हैं।

मूल्य की परिभाषा

मूल्य समाज के सदस्यों की आंतरिक भावना पर आधारित होते हैं। मूल्य सामाजिक जीवन को वह मनोवैज्ञानिक आधार प्रधान करते हैं,जो समाज-व्यवस्था संगठन के लिए आवश्यक होता है। डॉ. राधा कमल मुखर्जी ने मूल्यों को परिभाषित करते हुए लिखा है –"**मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं तथा लक्ष्य हैं । जिनका अंतरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। जो कि अतीतिक अधिमान्यताएं मान तथा अभिभावनाएं बन जाती है" ।** [1]

हिंदी उपन्यास, जो सदैव भारतीय समाज के यथार्थ का जीवंत दस्तावेज़ रहे हैं, उन्होंने इन बदलावों को अपनी विषय-वस्तु का केंद्र बनाया है। समकालीन उपन्यासकार जैसे नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, अलका सरावगी, प्रभा खेतान, आदि संयुक्त परिवारों के विघटन,व्यष्टि परिवार के उदय, आर्थिक स्वार्थों के कारण रिश्तों में आई दूरियाँ, व्यक्ति केंद्रित मानसिकता और सबसे महत्त्वपूर्ण स्त्री की बदलती भूमिका एवं स्वनिर्णय की आकांक्षा को अत्यंत बारीकी से चित्रित किया है।

यह शोध आलेख इसी बदलते परिदृश्य का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि नयी सदी के हिंदी उपन्यासों ने परिवार से संबंधित किन नए आयामों—जैसे लिव-इन रिलेशनशिप की स्वीकार्यता, पीढ़ियों के द्वंद्व की तीव्रता, और विवाह संबंधों की बदलती परिभाषाओं को स्थान दिया है।

विवाह संस्था और इसके बदलते आयाम

भारतीय समाज में विवाह को एक धार्मिक और सामाजिक संस्था के रूप में दर्शाया गया है। जिसका उद्देश्य परिवार, समाज और परंपरा को बनाए रखना था। इसमें अक्सर व्यक्तिगत इच्छा से ज़्यादा पारिवारिक सम्मान, जाति और आर्थिक स्थिति को महत्व दिया जाता था। लेकिन नयी सदी में विवाह की संस्था पर सवाल उठाए गए हैं। करियर को महत्व देना,विवाह में अविश्वास,नारी स्वतंत्र निर्णय लेना, और विवाह के बिना सह-जीवन जैसे विषयों ने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती दी है। इसका कारण नारी शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता ने स्त्री को परिवार में केवल एक आश्रित सदस्य से निकालकर एक स्वतंत्र निर्णय लेने वाले व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है। नयी सदी के उपन्यासों में विवाह और संबंधों की पारंपरिक परिभाषा पर गंभीर सवाल उठाए हैं। यहाँ हम विवाह के संदर्भ में युवाओं के बदलते मानसिकता, स्वतंत्र निर्णय लेना, सहजीवन आदि मुख्य बिन्दुओं को देखेंगे |

पीढ़ियों का द्वंद्व और वैचारिक टकराव

भारत की पारंपरिक संस्कृति में विवाह को एक पवित्र और सामाजिक बंधन माना जाता है। प्राचीन भारतीय समाज में लड़कियाँ विवाह से पहले अपने "कन्यत्व" को संजोकर रखती थीं। विवाह से पहले किसी प्रकार के शारीरिक संबंध की कल्पना भी अशोभनीय और अस्वीकार्य मानी जाती थी। लेकिन नई सदी के युवाओं की सोच अब बदल रही है। अब बहुत से युवक-युवतियाँ विवाह से पहले प्रेम संबंध में पड़ जाते हैं और बिना संकोच के शारीरिक संबंध भी बना लेते हैं। वे पहले साथ रहते हैं, एक-दूसरे को समझते हैं, और बाद में शादी करने का निर्णय लेते हैं। लेखक ने उपन्यास "बंधन" की पात्र निकिता के माध्यम से इस विचार को प्रस्तुत किया है । निकिता एक एम.बी.बी.एस. (डॉक्टरी) की छात्रा है, जो अपने सहपाठी अमित से प्रेम करने लगती है। उनका रिश्ता भावनात्मक ही नहीं, बल्कि शारीरिक भी हो जाता है – यानी उन्होंने विवाह से पहले भौतिक संबंध बनाए। इसका परिणाम यह होता है कि निकिता गर्भवती हो जाती है। इसके बाद वह और अमित शादी करना का निर्णय लेते हैं। निकिता अपनी माँ को फोन पर कहती है कि - "**आपको मैं डेट बता दूँगी, बस आप आ जाना।**"[2] यह संवाद दिखाता है कि निकिता की सोच अब पूरी तरह व्यक्तिगत निर्णय पर आधारित है। उसे विवाह के लिए अब परिवार की सहमति या परंपराओं की प्रक्रिया का कोई विशेष महत्व नहीं लगता।

माता-पिता अपने संतानें की जिन्दगी सँवारने के लिए अपनी कई इच्छाओं को तिलांजलि देकर जीते है । संतान भी माता-पिता पर उतना ही प्यार करती है और उन पर निर्भर रहती हैं । पिता से ज्यादा माँ- बेटी का संबंध बहुत दृढ होता है । बेटी पराया धन होने के कारण माँ पारिविक मूल्यों को देकर ही पालती-पोसती है । लेकिन वर्तमान युग में नारी शिक्षा एवं संवतंत्र विचार रखने के कारण माँ-बेटी के बीच संस्कार भेद पाया जाता है । मनोजसिंह के '**कशमकश**' उपन्यास में लेखक ने नयी पीढ़ी की संस्कारहीन बेटी का चित्रण किया है । उपन्यास की अर्पिता विवाह के पूर्व एक लड़के के साथ खुलेआम घूमती रहती है । माँ के मना करने पर भी वह नहीं सुनती । इस संदर्भ से उसका संस्कारहीन व्यवहार का पता चलता है कि -"**देर रात घर लौटी तो आखों से लुटी-पिटी दिख रही थी । पूछने पर जवाब दिया कि रवि के साथ थी ।**"[3] माता पिता अच्छे संस्कार देने से भी चंद संतान स्वतंत्रता के नाम से उच्छृंखल आचरण करते हुए वर्तमान युग की नयीपीढ़ी स्वतंत्र विचार रखनेवाली है । वह माता-पिता के अपनी जिन्दगी में हस्तक्षेप करना नहीं चाहती है । ऐसी ही एक लड़की का चित्रण लेखक ने 'कशमकश' उपन्यास में किया है ।

ऐसे ही रजनिगुप्त के उपन्यास "**नए समय का कोरस**" में लेखिका ने आज की पीढ़ी के कुछ युवाओं की विवाह के प्रति मानसिकता को बहुत ही स्पष्ट और बेबाक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की पात्र अमीषा एक अमीर लड़के से प्रेम करती है और उसके साथ केवल सुख और मौज-मस्ती से जीवन बिताना चाहती है। जब उसके दोस्त उससे विवाह करने की बात करते हैं, तो वह कहती है — "**शादी, हुँह, देखा जाएगा या बाद में सोचा जाएगा। तब तक इसके संग तो ऐश से रह लूँ, थोड़े पल सुकून से, चैन से जी तो लूँ।**"[4] इस कथन के माध्यम से लेखिका ने यह दर्शाया है कि अमीषा जैसी युवा पीढ़ी के कुछ लोग अब विवाह को एक आवश्यक सामाजिक बंधन नहीं मानते। उनके लिए विवाह की चिंता बाद की बात है; वे वर्तमान में प्रेम और भौतिक सुखों का आनंद लेना ज़्यादा महत्वपूर्ण समझते हैं। यह सोच विवाह संस्था के प्रति बढ़ती उदासीनता और वर्तमान सुख को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति को दर्शाती है। पुरानी पीढ़ी जहाँ संस्कार, नैतिकता और सामूहिकता को सर्वोच्च मानती है, वहीं नयी पीढ़ी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, तार्किकता और भौतिकता को महत्व देती है। यह पीढ़ी का अंतर संवादहीनता और अलगाव को जन्म देती है।

नयी सदी के विवाहित नारी आत्मनिर्भर होकर अपने भविष्य की सुरक्षा करने में सक्षम होती है | **ममता कालिया** का उपन्यास **सपनों की होम डिलीवरी** की रुचि शर्मा आर्थिक बलभूते पर पति से अलग होकर जीने में अपने आप को सक्षम पाती है। रुचि जो शिक्षिता है, पति के प्रताडनों से मुक्त होने की मानसिकता बना लेती है। वह केवल पति को ही छोड़ नहीं चाहती, अपितु उससे प्राप्त हुई हर वास्तु से मुक्त होना चाहती है ।यहाँ तक कि उससे प्राप्त संतान को भी कि - "**प्रभाकर का दिया हुआ कुछ भी मुझे मंजूर नहीं , बच्चा भी नहीं । समझ लो कि मेरी शादी कभी हुई ही नहीं"।**[5] नयी सदी की शिक्षिता और आर्थिक स्वतंत्र को प्राप्त नारी की आत्मनिर्भर मानसिकता भी बदलते नए मूल्यों की स्थापना कर रही है।

अविवाहित करियरवाद

युवा पात्रों में अपने करियर, स्थान और जीवन-शैली के संबंध में स्वयं निर्णय लेने का आग्रह दिखाई देता है, जिसे पारंपरिक परिवार अक्सर 'अनुशासनहीनता' या 'अनादर' मानते हैं। उपन्यास इन दोनों दृष्टिकोणों को एक-दूसरे के सम्मुख रखकर भारतीय परिवार के भीतर चल रहे सांस्कृतिक संघर्ष को उजागर करते हैं। रजनीगुप्त के नए समय का कोरस उपन्यास में नेहा अपनी माँ से विवाह के संदर्भ में इस तरह कहती है कि -– **मैं नहीं मानती किसी ऐसे बंधन को किसी पति नामक प्राणी के लिए हम अपनी समूची जिंदगी बदल डालें या फिर ताजिंदगी आपकी तरह कदम कदम पर समझौते करते फिरें| नौ ममा, मैं अपनी आजादी पसंद करती हूँ, इसे किसी कीमत पर नहीं जाने दूँगी** ।[6]

रजनीगुप्त के उपन्यास नए समय के कोरस में विवाहित युवा नारी संतान को जन्म देने में और उनकी जिम्मेदारी उठाने में तैयार नहीं है। वे अपने करिअर को जितना महत्व देती हैं उतना परिवार को नहीं । उपन्यास के खुशी अपने माँ से इसप्रकार कहती है कि - **तो क्या बच्चे जनने के लिए अपने करियर को दांव पर लगा दें? हाँ,जब बच्चे होने होंगे, हो जाएंगे,वरना कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा सिर पर ? ज्यादा से ज्यादा अडाप्ट कर लेंगे। पर अभी से क्यों आफत मोल लें?**[7]

नई सदी के चंद युवा अब विवाह के लिए इतनी मान्यता नहीं देते हैं जितना करिअर को देते हैं । वे मानते हैं कि विवाह उनके स्वतंत्र जीवन और करियर की तरक्की में बाधा बन सकता है। इसका एक उदाहरण रजनीगुप्त के उपन्यास *"नए समय का कोरस"* की पात्र नेहा के माध्यम से दिया गया है। नेहा आईटी क्षेत्र में काम करती है, और वह अपने करियर को आगे बढ़ाने पर ज़्यादा ध्यान देना चाहती है। शादी से बेहतर अपने करियर को महत्व देती हैं । जब नेहा की माँ उससे कहती है कि उसे शादी कर लेनी चाहिए ताकि उसका वंश आगे बढ़ सके, तब नेहा स्पष्ट से कहती है कि -**"अरे ममा, बच्चा तो एडॉप्ट भी किया जा सकता है, सिर्फ इसके लिए शादी? नो, नेवर..."** ।[8] उपन्यास की पात्र नेहा विवाह के पारंपरिक मूल्यों को चुनौती देती है।

सहजीवन

नयी सदी के एक नया अवधारणा है सहजीवन | इसमें नारी विवाह से अधिक स्वतंत्रता और लचीलापन मानती है | शरद सिंह के उपन्यास **कसबाई सिमोन** की प्रमुख पात्र सुगंधा, जो एक शिक्षित एवं स्वावलंबी महिला है तथा सरकारी सेवा में कार्यरत है, पारंपरिक विवाह संस्था को स्वीकार नहीं करती। वह रितिक के साथ सहजीवन (Live-in Relationship) व्यतीत कर रही है। विवाह के प्रति उसकी मानसिकता आधुनिक सोच का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे वह स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार व्यक्त करती है कि –"**मैं अपने जीवन को अपने ढंग से जीना चाहती थी और लिव इन रिलेशन वाला फंडा मुझे अपने ढंग जैसा लगा था** ।"[9] यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता, कमिटमेंट से बचने और पारंपरिक जवाबदेही को अस्वीकार करने की नई पीढ़ी की प्रवृत्ति को दर्शाता है।

नई सदी की कुछ युवतियाँ पारंपरिक विवाह की बजाय अनुबंध (कॉन्ट्रैक्ट) विवाह करना चाहती हैं। नासिर शर्मा के उपन्यास **'पारिजात'** में रूही, जो एक विधवा मुस्लिम महिला है, अपने बचपन के मित्र रोहन से पुनर्विवाह का निर्णय लेती है। रोहन का विवाह एक विदेशी महिला से हुआ था और उनका एक बच्चा भी है। लेकिन वह महिला रोहन को छोड़कर चली गई थी। इस कारण, दोनों मित्रों ने आपसी सहमति से विवाह करने का निश्चय किया| एक विशेष समझौते के अंतर्गत। रूही, रोहन को अपना निर्णय बताते हुए कहती है कि... – "**हाँ , नई जिंदगी को शुरू करने से पहले मैं अपने को मौका देना चाहती हूँ। अपने को**

आजमाना चाहती हूँ कि हम एक अच्छे दोस्त होने के बाद क्या हम बेहतर मियाँ -बीवी भी बन सकते हैं ? हमारे पैरों के नीचे जमीन दलदली नहीं बल्कि चट्टान की तरह सख्त हो" ।[10]

तकनीकी का प्रभाव

आज सोशल मीडिया का प्रभाव युवाओं पर इतनी तेज़ी से बढ़ा है कि वे फेसबुक जैसी साइटों पर अनजान लोगों से अपने मन की बातें बताना और प्रेम करना स्वाभाविक हो गया है। नासिरा शर्मा के उपन्यास "**वापसी इम्पॉसिबल** " की पात्र **सुरम्या** , फेसबुक पर अनुसार नामक लड़के से और कॉलेज में उसके साथ पढ़नेवाले विशेष नामक लड़के से भी एक ही समय में प्रेम करती है। प्रेम के नाम पर दोनों युवाओं से फायदा उठाती रहती है। सुरम्या मन ही मन कहती है कि - **"एक हाथ में अनुसार,मेरे पास मुझ पर सब कुछ लुटाने को तैयार था तो दूसरी तरफ विशेष मुझसे हाँ कहलवाकर इतना खुश था मानो सातवाँ आसमान अब उसका ही गुलाम हो । मैं दोनों को एक साथ संभालने की जद्दोजहद में जुट गई"** ।[11] आज के युवा में सच्चा प्रेम नहीं रहा और वे यह निर्णय उसके व्यक्तिगत अधिकार और आर्थिक परिस्थिति दोनों से जुड़ा है।

नयी सदी के उपन्यासों में प्रेम अब कोरी भावुकता नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक, जटिल और बहुआयामी अनुभव बन चुका है। प्रेम में अब विचारधाराएँ, आर्थिक स्थिति, लैंगिक पहचान, करियर प्राथमिकताएँ जैसी बातें भी स्थान पा रही हैं । समाज में पारिवारिक मूल्यों की अवधारणाएँ समय के साथ बदल रही हैं। अब विवाह केवल एक सामाजिक रस्म नहीं रह गया है, बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा, समझौता, और आत्मसम्मान पर आधारित एक परिपक्व निर्णय बनता जा रहा है। इस प्रकार, नयी सदी के उपन्यास भारतीय परिवार को एक गतिशील और बहुआयामी संस्था के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो आधुनिकता की कसौटी पर परखी जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नवें दशक की हिन्दी कहानी में मूल्यविघटन 92 (रिफर्ड मुखर्जी एण्ड बी सिंह दी फिटियर्स ऑफ सोशल साइंस,मैकमिलन एण्ड कं लंदन 1956 पृष्ठ सं. 23 से उद्धृत)
2. बंधन, मनोज सिंह – पृष्ठ सं .150
3. कशमकश,मनोजसिंह पृ.232
4. नए समय का कोरस – रजनीगुप्त – पृष्ठ सं 194
5. सपनों का होम डेलीवेरी – ममता कालिया – पृष्ठ सं 24
6. नए समय का कोरस – रजनीगुप्त - पृष्ठ सं 72
7. नए समय का कोरस – रजनीगुप्त - पृष्ठ सं 82
8. नए समय का कोरस – रजनीगुप्त - पृष्ठ सं 52
9. कसबाई सिमोन -शरद सिंह - पृष्ठ सं 31
10. पारिजात – नासिरा शर्मा – पृष्ठ सं 481
11. वापसी इम्पॉसिबल -सुरभि सिंघल पृष्ठ सं 81